NOTIFICATION: NO.519/2022 **DATE: 23-08-2022**

NAME: REKHA BHATI

SUPERVISOR: PROF. INDU VIRENDRA

NAME OF DEPARTMENT: HINDI

NAME OF TOPIC: SUNITA JAIN KE KAVAYA MEIN NARI SAMASYAON KA ADHYAYAN

Keywords: NARI-VIMARSH, PITRASATTA, SAMASYA, CHETNA, SANGHARSH

Findings

बदलते समय के साथ नारी अपनी बदलती जिम्मेदारियों के साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनैतिक चुनौतियों को बखूबी निभा रही है। इसलिए परिवार, समुदाय, राज्य, राष्ट्र और विश्व स्तर की प्रगति एवं विकास में उनकी भागीदारी बढ़ रही है। मोजूदा सामाजिक स्थिति में टूटते पारंपरिक परिवार, कामकाजी नारी की संतानों में बढ़ती मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, कार्यस्थलों पर शोषण की समस्याएँ, अंतर्जातीय एवं अंतरधार्मिक प्रेम विवाह, दहेज, बलात्कार, ऐसिड्र अटैक आदि ऐसी अनेकों समस्याएँ हैं, जिनके कारण पढ़ी-लिखी आत्मनिर्भर नारी के शोषण और संघर्ष को आज भी देखा जा सकता है। कवयित्री सुनीता जैन ने अपनी कविताओं के माध्यम से नारी की पारिवारिक और सार्वजनिक जीवन में उसकी स्थिति का आकलन में विभिन्न स्तरों एवं विविध पहलुओं के आधार पर किया है। कवयित्री सुनीता जैन की कविताएँ प्रश्नों की कविताएँ हैं, जिनमें कवयित्री द्वारा नारी के लिए चली आ रही परंपरागत विचारधाराओं को नए परिप्रेक्ष्य में देखने की दृष्टि प्रदान की गई है। परिवार से लेकर सार्वजनिक स्तर पर नारी की पराश्रिता छवि, घरेलू हिंसा, पालन-पोषण में दोगलापन, शिक्षा, यौन उत्पीड़न, विवाह, दहेज, गुजाराभत्ता, कामकाजी नारी तथा दैनिक आवश्यकताओं आदि के लिए संघर्षरत नारी की समस्याओं पर इनका स्वर तल्ख है। नारी के रोजमर्रा जीवन के दृश्य कविता में आते ही गहरे संकेत करने लगते हैं।

कवयित्री सुनीता जैन नारी संसार के वर्तमान और सुदूर भविष्य के बीच एक ऐसा वितान स्थापित करती हैं, जो नारी को अग्रगामी और प्रगतिशील चेतना से जोड़ते हैं। नारीत्व की विशिष्ट अनुभूतियों के सकारात्मक बिंब नारी स्वतंत्रता के विचारों को विकसित करते हैं। सकारात्मक सोच और चिंतन

के द्वारा ही नारी से जुड़ी परंपराओं को न केवल प्रश्नांकित किया जा सकता है बल्कि मुक्ति के रास्ते भी तलाशे जा सकते हैं। जीर्ण मान्यताओं एवं विपरीतताओं से लड़कर निश्चित दायरों से बाहर आने की कोशिश ही नारी को अपनी समस्याओं से आश्वस्त होकर जीना सिखा सकती है।